मणिपुर सरकार को कांगला दुर्ग सौंपने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

20 नवम्बर, 2004
मणिपुर

यह हम सभी लोगों के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। मणिपुर सरकार को कांगला दुर्ग परिसर सौंपने के इस पवित्र अवसर पर आप सब के साथ उपस्थित होकर मुझे खुशी हो रही है।

कांगला दुर्ग सन् 1891 में ब्रिटिश शासन की फौजों द्वारा जीत लेने के पश्चात् पहली बार राज्य सरकार के सीधे नियंत्रण में आ रहा है। यह ऐतिहासिक घटना श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्म दिन के तीन दिन बाद घट रही है जिन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में 21 जनवरी, 1972 को मणिपुर राज्य के गठन का उद्घाटन किया था और कहा था कि "मणिपुर वास्तव में भारत की मणि है।" उन्होंने कहा था कि, "यह हमारी कामना है कि मणिपुर मणि की तरह चमकता रहे और पूरे भारत में अपनी सुन्दरता बिखेरता रहे।"

जैसा कि पंडित नेहरू ने कहा था, "यदि मणिपुर भारत की मणि है तो कांगला दुर्ग इसके मुकुट की मणि है। कांगला दुर्ग मणिपुर राज्य की धुरी है और यह न केवल सांसारिक शक्ति का द्योतक है बल्कि लोगों की आध्यात्मिक तथा धार्मिक परम्पराओं का भी प्रतीक है। इसके चारों ओर मणिपुर तथा इसकी परम्पराएं विकसित हुई हैं और मणिपुर ने इस पर अपने राजनैतिक प्रभुत्व, अपने सैनिक पराक्रम और अपने पवित्र क्षेत्र के गौरव के साथ नियंत्रण रखा है।"

मणिपुर की पुरानी विरासत और बहादुरी की परम्परा राज्य की चारों दिशाओं में गूंजती रहती हैं और शेष भारत को भी प्रेरणा देती हैं। कांगला दुर्ग ने मणिपुरवासियों की बहादुरी का उदाहरण प्रस्तुत किया है और यह उन ब्रिटिश अधिकारियों के विरूद्ध अनेक भयंकर लड़ाइयों का साक्षी रहा है जिन्होंने इस पर कब्जा करने तथा इसके लोगों को जीतने की कोशिश की। भारत की आजादी की लड़ाई में देश के इस भाग में ब्रिटिश फौजों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए कांगला दुर्ग की प्रतिरोध तथा शहादत के केन्द्र के रूप में विशेष भूमिका रही थी। इसलिए मणिपुर के इतिहास में और हमारे पूरे देश के इतिहास में कांगला दुर्ग का अग्रणी स्थान है जो हमारे लोगों द्वारा लड़ी गई आजादी की लड़ाई की हमें याद दिलाता है।

कांगला दुर्ग को मणिपुर राज्य में तथा बाहर रहने वाले मणिपुरवासियों द्वारा पवित्रतम् स्थल का दर्जा दिया जाता है। इसलिए वे इसे तीर्थयात्रा के केन्द्र के रूप में मानते हैं। इस राज्य के इतिहास तथा पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह किला यहाँ के निवासियों के दिमाग पर जादू कर देता है और उन्हें तथा उनके विचारों को गहराई से प्रभावित करता है। इसलिए लोगों की मांग तथा उनकी भावनाओं को देखते हुए भारत सरकार ने इस जादुई दुर्ग का स्वामित्व राज्य सरकार को सौंपने का निर्णय लिया। जैसे कांगला दुर्ग मणिपुरी लोगों के दिलों में गौरवपूर्ण स्थल के रूप में बसा है ठीक वैसे ही, मणिपुर सभी भारतीयों के दिलों में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान

रखता है। मणिपुर वह पवित्र स्थल है जहाँ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा उपनिवेशवादी शक्ति, ब्रिटेन के विरूद्ध शुरू की गई लड़ाई चरम सीमा पर पहुँची थी। वास्तव में, भारत में वह पहला स्थान जहाँ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया था, मणिपुर में मोयरंग था। नेताजी की भारतीय राष्ट्रीय सेना की दूरस्थ पहॅुच मणिपुर में थी और इम्फाल के लिए हुई लड़ाई की कहानियाँ झकझोर देने वाली हैं। इस भूमि पर अनेक भारतीय राष्ट्रभक्तों ने स्वतंत्रता और गौरव की तलाश में अपना जीवन कुर्बान कर दिया। मुझे यह बताया गया है कि मणिपुर के अनेक लोग भारतीय राष्ट्रीय सेना के एक हिस्से के रूप में युद्ध में शामिल थे। यह दर्शाता है कि हमारे राष्ट्र के लिए राष्ट्रभक्ति और प्यार मणिपुर वासियों के दिमाग में गहराई तक ठीक उसी प्रकार भरा है जैसा कि यह देश के अन्य भागों में है।

कांगला दुर्ग का स्वामित्व मणिपुर के लोगों को सौंपने का निर्णय करके हम उनकी देशभक्ति और अपने राष्ट्र के लिए उनके प्यार को सलामी देते हैं।

इस दुर्ग के गौरव को पुनः बहाल करने और इसे संपूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में एक अद्वितीय पुरातत्वीय पार्क बनाने की योजनाओं के लिए मैं मणिपुर सरकार का अभिनन्दन करता हूँ। यह जानकर मुझे खुशी हुई है कि कांगला विकास परियोजना में दुर्ग के चारों ओर देशी वृक्ष और औषधीय पौधे लगाने की एक योजना शामिल है। इस अवसर पर मणिपुर की जनता और सरकार को मुबारकबाद देते हुए और मुझे तथा मेरे दल के सदस्यों का गरमजोशी के साथ स्वागत करने और आदर-सत्कार करने के लिए उनका धन्यवाद करते हुए मैं आपके साथ मेरे विचार बांटना चाहूँगा।

आप जानते ही हैं कि मणिपुर और इसकी संस्कृति और परंपरा ने हमेशा ही सारे भारत के लोगों को मोहित किया है। हमारे पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने 1952 में मणिपुर का दौरा किया था और मुख्यमंत्री को लिखे एक पत्र में इस राज्य तथा यहां के लोगों की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी और राज्य की कला, संस्कृति, चरित्र और सबसे बढ़कर, यहां की महिलाओं की सराहना की जिनकी आजदी और आत्म-निर्भरता ने उनके मन पर गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने लिखा 'यदि मणिपुर ने अपना विशिष्ट चरित्र और संस्कृति को धूमिल होने दिया तो यह दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी'। इस राज्य की समृद्धि और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए पं0 जवाहर लाल नेहरू ने इसे पूर्व का स्विटजरलैंड और भारत का रत्न कहा था।

जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, वह श्रीमती इंदिरा गांधी ही थी जिन्होंने मणिपुर के लोगों को अपना अलग राज्य बनाने की इच्छा पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ताकि वे अपनी प्रतिभा के अनुरूप अपने भाग्य का निर्माण कर सकें और उसे विकसित कर सकें। यह याद करना महत्वपूर्ण तथा सूचनापरक है कि शांति निकेतन में अध्ययन करते हुए श्रीमती इंदिरा गांधी मणिपुर ग्रुप में थीं और उन्होंने मणिपुरी नृत्य सीखा था। वस्तुतः पंडित जी ने 1952 में इस राज्य के अपने दौरे के दौरान मणिपुर में कई नृत्य देखे और लिखा, "जो आम नृत्य हम भारत में अन्यत्र देखते हैं वे सभी मणिपुर की इस प्रस्तुति के सामने फीके नजर आते हैं—नर्तक प्रोफेशनल होते हैं और उन्होंने अनेक वर्षों तक कठोर प्रशिक्षण लिया होता है। लेकिन जो कलात्मकता और जीवंतता मैंने यहां देखी वह किसी भी प्रशिक्षण से प्राप्त नहीं हो सकती अगर कलाकार के अंदर

वह चीज न हो।" यही प्राकृतिक सौंदर्य मणिपुर को कला के सभी रूपों में अद्‌भुत बनाता है और यह सभी भारतीयों के लिए गौरव की बात है।

कलाकृतियों में अपनी उत्कृष्टता के अतिरिक्त, मणिपुर हाल के वर्षों में खेलों के क्षेत्र में भी उत्कृष्टता हासिल करता रहा है। कम ही लोग यह जानते होंगे कि यहां पोलो का खेल सदियों से शेष भारत में आरंभ किए जाने से बहुत पहले से ब्रिटिश लोगों द्वारा खेला जाता रहा है। मणिपुर फुटबाल और हॉकी से लेकर भारोत्तोलन तथा तीरंदाजी तक बहुत से खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता आ रहा है। मणिपुर के खिलाड़ियों के नाम देश में घर-घर जाने जाते हैं। मुझे आशा है कि यह राज्य विश्वस्तरीय पुरूष-महिला खिलाड़ी उत्पन्न करता रहेगा जो हमारे राष्ट्र का नाम रोशन करेंगे।

मणिपुर में संस्कृति और परंपराओं की विविधता को देखते हुए और मणिपुरियों के अपने साथी नागरिकों के साथ मजबूत संबंधों को देखते हुए मुझे विश्वास है कि देश की तस्वीर बदल रही आर्थिक विकास की प्रक्रियाओं से मणिपुर को लाभ होगा। हमें अपने देश को अभाव और बीमारियों से मुक्ति दिलानी है और सभी नागरिकों को एक शालीन, गौरवपूर्ण व शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करना है। मैं वादा करता हूँ कि हमारी सरकार मणिपुर का तीव्र गति से विकास करेगी ताकि मणिपुर की जनता अपनी पूर्ण संभावनाओं के साथ जीवनयापन कर सकें और शांति व खुशहाली के लाभ ले सकें।

हमारी सरकार मणिपुर की जनता की परेशानियों और शिकायतों के निवारण के लिए प्रतिबद्ध है। मैंने दिल्ली में मणिपुर के कुछ संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। मैंने उन माताओं से दुख-दर्द व सहानुभूति जताई जिन्होंने अपने बच्चे खो दिए थे। मेरे इस आश्वासन के उपरांत कि हम सशस्त्र सेना विशेष अधिकार अधिनियम के सबंध में वैध शिकायतों का निवारण करेंगे, हमने अधिनियम के प्रावधानों की पुनरीक्षा के लिए एक समिति गठित की है। यह समिति उक्त अधिनियम में अधिकारों पर नियंत्रण लगाने अथवा उसके स्थान पर एक ऐसा ज्यादा मानवोचित कानून लाए जाने के बारे में सुझाव देगी जो आपकी जायज़ आकांक्षाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा संबंधी चिंताओं का ध्यान रखे। यह समिति 6 महीने में अपना कार्य पूरा करेगी। मुझे उम्मीद है कि इस समिति के काम से राज्य में स्थायी शांति और सद्‌भावना लौटेगी।

यदि मणिपुर में शांति व व्यवस्था की स्थिति बन जाती है तो राज्य और उन्नति तथा विकास करेगा। हमें आज समस्याओं से निपटने के सभी हिंसक तरीकों से दूर रहने और समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने के लिए संवैधानिक प्रक्रियाओं में शामिल होने की प्रतिज्ञा करनी होगी। सन् 1940 में जब मणिपुरी लोगों का एक दल महात्मा गांधी से मिला था और उन्हें बताया कि उन लोगों ने अपने खिलाफ किए जा रहे भेदभाव के विरोध में आंदोलन शुरू किया है तो गांधी जी ने उन्हें सलाह दी कि वे अपना आंदोलन पूरी तरह शांतिपूर्ण और अहिंसक रखें। जब हमारी समस्याओं के निवारण के लिए संवैधानिक तथा कानूनी तरीके उपलब्ध हैं तो उस सरकार के खिलाफ विरोध जताने के लिए शस्त्रों का सहारा लेना उचित नहीं है जो जनता की समस्याओं को दूर करने के लिए तैयार है। मैं मणिपुर समाज के सभी वर्गों से अपील करता हूँ

कि वे आगे आएँ और राष्ट्र निर्माण के कार्य में जुट जाएँ ताकि हम सब मिलकर जनता के लिए शांति और खुशहाली के नए युग की शुरूआत कर सकें।

मैंने पहले ही कहा है, हम मणिपुर का सम्पर्क इसके चारों ओर के क्षेत्रों से और अधिक बढ़ाना चाहते हैं। हम ऐसा करने के लिए आधुनिक आधारभूत संरचना के सृजन हेतु निवेश करना चाहेंगे। तथापि, इसके लिए हमें शांति, सुरक्षा और राजनैतिक स्थिरता की जरूरत पड़ेगी। यदि हम शांतिपूर्ण हालात फिर से कायम करने के लिए मिलजुलकर काम करें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मणिपुर भारत की मणि बन जाएगा।

आशा है कि मणिपुर राज्य के गौरव तथा उत्कष, कांगला दुर्ग को सौंपने से मणिपुर के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरूआत होगा—एक ऐसा अध्याय जो हम सभी के लिए आपसी समझ-बूझ, मैत्री, शांति, न्याय तथा सम्पन्नता का अध्याय हो।

*****